अध्याय - 4

1.	**प्रार्थना**

दल के अगुवेः प्रार्थना करें और अपने दल को और पाठ्यक्रम दोनों को परमेश्वर को समर्पित कर दें।

2.	**गवाही बाँटना** (20 मिनट)	***[शान्त समय]*** **मत्ती 11:25 – 14:36**

पढ़े और वचन बाँटे, (या अपने नोट्स में से पढ़ें) संक्षेप में वही बोले जो आपने परमेश्वर के साथ जो वचन आपको दिया गया था (मत्ती 11:25 – 14:36 तक) उससे अपने निजि समय में जो भी आपने सीखा है, उसे सब के साथ बाँटें। जो भी वचन बाँट रहा है उसे सुने और जो वह कहता है उसे गम्भीरता से लें और उसे ग्रहण करें पर उस पर किसी तरह की बहस न करें।

3.	**याद करना** (20 मिनट)	***निश्चितता*** **प्रार्थना का उत्तर निश्चित है युह.16:24**

क.प्रोत्साहित करना (याद करने के लिए)

पढ़ेः भजन 119:9,11

खोज करे या विचार विमर्श करेः बाइबल के वचनों को याद करना क्यों ज़रूरी है? चाहे लेखाँश हो या फिर अध्याय?

नोट्सः याद किए हुए वचन हमेशा आप की इस दुष्ट दुनियाँ में एक सच्चा और पवित्र जीवन जीने में सहायता करेंगे।

क. मनन करना (एक बाइबल के लेखाँश का)

यह वचन एक सफेद या काले कागज़ पर लिखें या फिर श्यामपट पर लिख लें।

निश्चय ही प्रार्थना का उत्तर मिलेगा **युहन्ना 16:24**
अब तक तुम नें मेरे नाम से कुछ नहीं माँगा है। माँगो तो तुम्हें दिया जाएगा और तुम्हारा आनन्द पूरा हो **युहन्ना 16:24**

बाइबल का यह संदर्भ इस कागज़ के उलटी तरफ लिख दें।

1.बाइबल में परमेश्वर के नामों का अर्थः

पुराने नियम के समय में लोग परमेश्वर को सीधे-सीधे प्रभु या यहोवा पुकारते थे।(भजन 5:1-2) वे अपनी प्रार्थना का अन्त परमेश्वर के नाम से नही कहते थे।बाइबल में नामों के अर्थ होते हैं।परमेश्वर के नाम सदा परमेश्वर के अस्तित्व और उसके चरित्र को अभिव्यक्त करते हैं। केवल परमेश्वर ही है जो अपने नाम पर खरा उतरता है। यह कटु सत्य है क्योंकि परमेश्वर के नाम है इस लिएवह स्वयं को जानता है। और यह भी सच है कि परमेश्वर स्वयं को दूसरों पर प्रकट करता है। क्योंकि वह चाहता है कि लोग जाने कि वह कौन है और वे प्रार्थना में उसके साथ समबन्ध जोड़ें।

परमेश्वर का नाम है, यहोवा एलोहीम, जिसका अर्थ है सर्वशक्तिमान जो आदर के योग्य है और जिसका भय मानना ज़रूरी है।(यशायाह 40:18 और यशायाह 46:9-11) उसका नाम प्रभु या यहोवा का अर्थ है, "मैं हूँ, मैं ही परमेश्वर हूँ और मै वही रहूँगा जो मैं रहूँगा" यही परमेश्वर की वाचा का नाम है जिस में परमेश्वर ने कहा है कि मै अपने लोगो से बाँधी वाचा के प्रति विश्वासयोग्य रहूँगा। (निर्गमन 3:14-15; 34:6-7)

यीशु मसीह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रकटीकरण है। (यशायाह 9:6; कुलुसियों 1:15; 2:9) यीशु मसीह के नाम का भी अर्थ है। यीशु का अर्थ है उद्धारकर्ता, (मत्ती 1:21)क्रीस्ट या मसीहा का अर्थ है वह जिस का अभिषेक हुआ है।उसी का यह नाम है क्योंकि उसका अन्तिम भविष्द्वाक्ता (नबी), महायाजक और अनन्तकाल का राजा होने के लिए पवित्र आत्मा से अभिषेक हुआ है।एक भविष्यद्वक्ता(नबी) होने के नाते वह हम पर परमेश्वर के वचन और खुद परमेश्वर का प्रकटीकरण करता है। वह तो एक याजक और अनन्तकाल का राजा है। याजक होने के नाते वह हम पर परमेश्वर और उसके वचनों को प्रकट करना है। एक याजक होने के नाते उसने हमारे सभी पापों का कर्ज़ चुकाया है और वह हमारे लिए प्रार्थना करता है। वहराजा बन कर वह हमारे जीवनों पर राज्य करता है। और हमारे जीवन को हर बुराई से बचाता है।

2.यीशु के नाम से प्रार्थना करनाः

मसीही लोग यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं क्योंकि यीशु मसीह परमेश्वर और हमारे बीच मध्यस्थ हैं। यीशु के नाम से प्रार्थना करने के तीन महत्त्वपूर्ण अर्थ हैं।

क्योंकि यीशु मसीह ने परमेश्वर के चरित्र, उसके शब्दों और उसके कर्मों को प्रकट किया है। मसीही लोग परमेश्वर को निजि रूप से बहुत ही निकटता से जान सकते हैं क्योंकि वे यीशु मसीह को जानते हैं। वह जिसने यीशु मसीह को देख लिया है उसने अदृश्य परमेश्वर को भी देख लिया है। (युहन्ना 14:9-10)वह जो यीशु मसीह को जानता है वह परमेश्वर को भी जानता है। (युहन्ना 8:19, मत्ती 11: 27) वह जो यीशु मसीह पर विश्वास करता हैवह परमेश्वर पर भी विश्वास रखता है। (युहन्ना 12: 44) जो कोई यीशु मसीह को ग्रहण करता है वह परमेश्वर को भी ग्रहण कर लेता है। (युहन्ना 13: 20) परमेश्वर उन मसीहों की प्रार्थनाएँ सुनता है जो यीशु के नाम से प्रार्थना करते हैं।

क्योंकि यीशु मसीह नें विश्वासियों की सम्पूर्ण और सर्वोच्च धार्मिकता पूरी की हैः एक विश्वासी की धार्मिकता परमेश्वर की ओर से आती है और यह यीशु मसीह की कुर्बानी की मृत्यु और पुनरोत्थान पर आधारित है। (2 कुर. 5:21)जब परमेश्वर एक विश्वासी की ओर देखता है जो यीशु मसीह में है तब वह केवल यीशु मसीह की धार्मिकता को देखता है। परमेश्वर उन मसीहों की प्रार्थनाएँ सुनता है जो यीशु मसीह की धार्मिकता प्राप्त कर लेते हैं। (1 पतरस 3:12)

क्योंकि यीशु मसीह ने परमेश्वर की मर्ज़ी और उसके मार्गों को प्रकट किया हैः परमेश्वर उन मसीहों की प्रार्थनाएं सुनता है जिन की प्रार्थनाए यीशु से मेल खाती हैं और जो परमेश्वर की मर्ज़ी के अनुसार होती हैं। (1 युहन्ना 5:14)

सो इस लिए यीशु मसीह के कारण ही मसीहों का परमेश्वर के साथ स्वर्ग में सीधा सम्बन्ध है(इफि. 2:18) और मसीही लोग किसी भी समय आज़ादी और आत्मविश्वास के साथ परमेश्वर के निकट जा सकते हैं। (इफिसियों 3:12; इब्रानियों 4: 14-16)

क.याद करना और पुनरावलोकन

1.लिखोः अपनी कापी के एक खाली पेज पर बाइबल का वचन लिखें।

2.याद करोः बाइबल का वचन प्रार्थना के उत्तर का आश्वासन पाने की सही राह है।

3.पुनरावलोकन दो-दो के दल बना कर एक दूसरे के आखरी याद किए वचन की जाँच करें।

4.	**बाइबल अध्ययन** (70 मिनट)	***जीवन के विषय में प्रश्न*** **मैं कहाँ से आया हूँ? (उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ)**

बाइबल अध्ययन के पाँच तरीकों की विधि का इस्तेमाल करके उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ का अध्ययन करें।

<u>पहला तरीका - पढें</u> **परमेश्वर का वचन**

पढ़ेः उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ एक साथ पढ़ें।

आईए हम मिल कर बारी बारी से एक-एक पद करके वचन पढ़ें जब तक पूरा लेखाँश समाप्त न हो जाए।

<u>दूसरा तरीका - खोजें</u> **अवलोकन करें**

ध्यान देः यहाँ पर कौन सा लेखाँश आप के लिए महत्त्वपूर्ण है?

या ऐसा कौन सा सच है इस लेखाँश में जिस ने आपके दिल को छू लिया है?

लिख लेः लेखाँश में से एक या दो सत्यों को खोज निकालें। उनके विषय में सोचें और अपने विचार अपनी कापी में लिख दें।

गवाही बाँटेः (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और कापी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।

(नीचे कुछ लोगों के उदाहरण दिए गए हैं जिन्होंने अपने विचार बाँटे थे कि उन्होंने क्या पाया था। पर याद रहे हर छोटे दल में लोग अलग-अलग बातें बाँटते हैं। पर यह ज़रूरी नही है कि सब के विचार एक समान हो।)

1:27

<u>खोज 1. परमेश्वर ने पुरुष और स्त्री दोनों को अपने ही स्वरूप में बनाया था।</u>

मैं पशुओं से भिन्न हूँ क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप में नहीं बनाए गए हैं। क्योंकि मैं परमेश्वर के स्वरूप की छाया हूँ इस लिए मुझ में परमेश्वर के व्यक्तित्व को देखा जा सकता है। मुझे भी वही विशेष गुण दिये गए हैं जो उसके पास हैं।

1:28

<u>खोज 2. परमेश्वर ने मुझे एक विशेष कार्य के लिए बनाया था।</u>

मुझे परमेश्वर के साथ एक सम्बन्ध स्थापित करने के लिएरचा गया था। परमेश्वर का आदर करते हुए मुझे उसके स्वरूप को एक योग्य रूप में ले कर चलना होगा। दूसरे लोगों के आदर के लिए मुझे स्त्री और पुरुष दोनों का उनके स्वभाव के अनुसार आदर करना है और नियम के अनुसार उनके अधीन भी रहना है।

<u>तरीका 3. प्रश्न</u> **समझाना**

ध्यान देः इस लेखाँश में कौन सा ऐसा प्रश्न है जो आप इस दल से पूछना चाहेंगे?

आईए हम कोशिश करें कि उत्पत्ति 1:1 -2:4अ के सभीसत्यों को समझ सके और प्रश्न पूछें उस सब के विषय में जो अब तक समझ नहीं आया है।

लिख लेः अपना प्रश्न पूरी स्पष्ट रीति से पूछें और उसे अपनी कापी में लिख लें।
गवाही बाँटेः (जब सभी दल के सदस्य 2 मिनट तक विचार कर चुकें और काफी में अपने विचार लिख चुके हों तब बारी-बारी सब अपने विचारों को दूसरों के साथ बाँटें।
विचार-विमर्श करेः (फिर इन में से कुछ प्रश्न चुन कर उन के उत्तर पर दल के साथ मिल कर विचार-विमर्श करें और उनका उत्तर खोजने की कोशिश करें।)
नीचे प्रश्नों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं जो विद्यार्थी पूछ सकते हैं और साथ ही कुछ आपने कापी में लिखा है उस पर भी जिन पर विचार विमर्श किया गया था।

2.4

<u>प्रश्न 1. उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ किस प्रकार की साहित्यिक शैली में लिखा गया है?</u>

नोट्सः क्योंकि मनुष्य सृष्टि के रचे जाने के समय उपस्थित नहीं था, परमेश्वर उसी सृष्टि रचित मनुष्य के सामने प्रकट करता है कि यह एक वैज्ञानिक निबन्ध, दर्शन या कविता के समान नहीं वरन एक ऐतिहासिक वर्णन के रूप में दिया है। (उत्पत्ति 2:4)

1:31-2:1
<u>प्रश्न 2. सृष्टि की रचना करने में कितना समय लगा ?</u>

नोट्सः बाइबल बताती है 6 दिन। इन दिनो को कैसे समझ सकते हैं?

इब्रानी भाषा में दिन को **योम** कहते हैं और उत्पत्ति के 1 अध्याय में लेखक कभी भी 24 घंटे के दिन की बात नहीं कर रहा था क्योंकि समय का मापना केवल सृष्टि के चौथे दिन में ही सामने आया था। (उत्पत्ति 1:14) पद 5 में वचन में पहली बार दिन शब्द का प्रयोग किया गया था। और वह उजाले के विषय में कहा गया था और फिर सृष्टि के पूरे 24 घंटे के दिन के विषय में कहा गया था। और उत्पत्ति के 2:4 पद में जब दिन का वर्णन है तो वह पूरी सृष्टि की रचना के 6 दिन के समय के विषय में बात कर रहा है। इस रीति से दिन का प्रयोग 5 भिन्न तरह से किया गया है।

उत्पत्ति 1:27 जो सृष्टि का छटा दिन था, उससे पहले ही परमेश्वर ने पशुओं की रचना कर दी थी। उसके बाद ही परमेश्वर ने मनुष्य की रचना की थी। यही परमेश्वर की सृष्टि की रचना का अन्तिम कार्य था। लेकिन जब हम उत्पत्ति 2:15-22 को देखते हैं कि आदम और हव्वा की सृष्टि के समय में काफी अन्तर है। आदम का काम था कि वह उस विशाल अदन वाटिका की देखभाल करे। यह परमेश्वर का निर्णय था कि वह आदम के लिए एक अच्छी सहायक की रचना करे क्योंकि उसका वाटिका में काम करते काफी वक्त गुज़र चुका था और धीरे-धीरे वह उसमें रुचि खोने लगा था। आदम के काम में उसकी कमी पूरी करने के लिए और उसके अकेलेपन को दूर करने के लिए परमेश्वर ने आदम को एक बड़ा काम दिया था। उसे हर जानवर, पक्षी और जीवाणुओं की जाति नियुक्त करके उनके नाम रखने थे। जब यह काम खत्म हो गया था और आदम ने सभी पशु, पक्षियों और जीव-जन्तुओं के नाम रख दिए थे तब उसके अकेलेपन को फिर से दूर करने के लिए परमेश्वर ने उसकी पत्नी की रचना की थी। और वह भी शरीर के उस अंग से जो उसके दिल के सबसे निकट था। इस लिए उत्पत्ति का 1 अध्याय इस लिए नहीं लिखा गया था जिससे कि यह सिखाए कि सृष्टि का छटा दिन केवल 24 घण्टे का माना जाए।

उत्पत्ति 1 को लिखने का उद्देश्य यह कभी भी नही था कि हम जान सकें कि परमेश्वर ने सृष्टि या पृथ्वी की रचना कितनी शीघ्रता से की थी। या परमेश्वर ने सृष्टि को बनाने में कितना समय लगाया था। वरन इस लिए लिखा गया ता कि लोग जाने कि सृष्टि की रचना किस ने की थी, कैसे की थी और उसकी रचना करने का उद्देश्य क्या था।

1:1-2

<u>प्रश्न 3. परमेश्वर ने सृष्टि की रचना कैसे की थी?</u>

नोट्सः

<u>आदि मेः</u>

आदि में (समपूर्ण धारणा यही है) कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने सब से पहले अपनी सृष्टि में आकाश और पृथ्वी की रचना की थी। यह तो सृष्टि के जन्म के संदर्भ में है, जब परमेश्वर ने भौतिक(साँसारिक) चीज़ों की जैसे ऊर्जा, अन्तरिक्ष, और समय की रचना की थी और उन चीज़ो की भी जिन को देखा नहीं जा सकता है। (इब्रानियों 11:3) बाइबल उन बातों के प्रकटीकरण पर अधिक ध्यान देती है जो भविष्य में मनुष्य के लिए इस सृष्टि में महत्त्वपूर्ण होने वाली थीं। सूर्य, चन्द्रमा, सितारे, और पृथ्वी। ध्यान रहे परमेश्वर का अस्तित्व तो समय की सृष्टि के पहले से ही विद्यमान था। शब्द सृष्टि करना (एच: बारा) का प्रयोग केवल परमेश्वर के लिए किया गया है, मनुष्य के लिए नहीं। पृथ्वी बेडौल थी, खाली और अँधकारमय थी। उसका कोई व्यवस्थित रूप नहीं था। वह एक बाढ़ ग्रसित स्थान के समान दिखाई देती थी। उसमें कोई ज्योति भी नहीं थी। न ही उस पर कोई ज़मीन पर रहने वाले या जल में रहने वाले जीवित प्राणी था। सही छाया पथ या आकाश गंगा बनाने में बहुत समय लग गया था जो आकाश गंगा का रूप होती। और सही सितारा छायापथ के अन्दर ही सही स्थान पर पाया जाना जो सूर्य कहलाए और एक सही नक्षत्र जो सूर्य से सही दूरी पर हो और पृथ्वी कहलाए जिस पर जीवन पाया जा सकें।

उत्पत्त् 1:1-2 को 6 दिन में की गई सृष्टि की भूमिका कह सकते हैं जो पेश करती है उस प्रगति को जो परमेश्वर ने इस पूरी सृष्टि में क्रमअनुसार हर स्तर पर पृथ्वी के नक्षत्र पर उस रूप में पूरी की थी जिसे हम आज भी देख और जान सकते हैं। (उत्पत्ति 2:1)

<u>सृष्टि का पहला दिनः</u>

उत्पत्ति 1:3-5 बताता है कि सृष्टि में किस रीति से पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप से ज्योति कैसे प्रकट हुई थी।

जीवन और ज्योति सर्वशक्तिमान परमेश्वर की विशेषताएँ हैं। जीवन और ज्येति तो मानो परमेश्वर ने विरासत में पाए हैं, ये तो उसके स्वभाव की विरासत है। जीवन तो मानो परमेश्वर की विशेषताओं या चरित्र के गुणों का साराँश है। उदाहरण के लिए उसकी धार्मिकता, पवित्रता, प्रेम, विश्वासयोग्यता, दया, अनुग्रह आदि। और वह ज्योति जीवन को स्पष्ट रूप से प्रकट करने का भाव है। (युहन्ना 1:4-5) सो देखा जाए तो धार्मिक रूप से सदा जीवन और ज्योति पाई जाती है।

इस सृष्टि के जन्म के समय में परमेश्वर ने भौतिक(प्राकृतिक) ज्योति (अर्थात ऊर्जा) की सृष्टि की थी जो सितारों के छायापथ से और जलते हुए सूर्यों की भौतिक ज्योति से उत्पन्न होती है। और वह तभी दिखाई दी जब उसका प्रतिबिम्ब अन्य नक्षत्रों और चन्द्रमाओं के रूप में देखने को मिला था। (उत्पत्ति 1:3-5) लेकिन सूर्य और चन्द्रमाओं और नक्षत्रों की ज्योतियाँ केवल सृष्टि के चौथे दिन ही पृथ्वी पर देखी जा सकीं थी। और तभी से ये समय और मौसम के बदलने का संकेत देने वाले सूचक बन गए थे। (उत्पत्ति 1:14)

नई पृथ्वी पर यीशु मसीह ही भौतिक और आत्मिक रीति से ज्योति का स्रोत होंगे। यीशु मसीह ही परमेश्वर के उस अदृष्य जीवन का प्रकटीकरण है। और इस नई पृथ्वी पर फिर कभी भौतिक रात या आत्मिक अन्धकार नहीं होगा। (प्रकाशितवाक्य 21:23; 22:5)

<u>सृष्टि का दूसरा दिनः</u>

उत्पत्ति 1:6-8 प्रकट में लाता है वह वातावरण की सृष्टि या कहें तो आकाश की सृष्टि जिसमें भाप के गीलापन को बादलों में ढाल दिया गया था और फिर वही नमी पृथ्वी की सतह पर भाप से पानी बन जाना। और ऐसा इस लिए हुआ था कि सूरज, चाँद, और सितारों के पृथ्वी पर से अब तक देखा नहीं जा सकता था।

<u>सृष्टि का तीसरा दिनः</u>

उत्पत्ति 1:9-13 यहाँ पर सूखी धरती या कहें तो महाद्वीपों और महासागरों की सृष्टि के दिन का वर्णन है। सभी समुद्रों, सागरों, और झीलों का स्तर नीचा हो गया था। और धरती के सूखे भाग उन से ऊँचे उठ आए थे। धीरे-धीरे जैसे पृथ्वी ठण्डी होने लगी तब पानी का भाप से द्रव्य बन जाना और भूकम्प के दबाव नें पहाडों की सृष्टि की थी। परमेश्वर की सृष्टि की आज्ञा के द्वारा भूमि ने भिन्न-भिन्न प्रकार के पौधों, और पेड़ों की सृष्टि की थी। और सूर्य की ज्योति उन घने बादलों में से छन कर जो पृथ्वी के चारों थे उसने पानी के साथ मिल कर प्रकाश-संश्लेशण सम्भव हो सकता था।

<u>सृष्टि का चौथा दिनः</u>

उत्पत्ति 1: 14-19 बताता है कि परमेश्वर नें बादलों के उस आवरण को जो पृथ्वी के चारो ओर था इतना चीर दिया कि सूरज की रौशनी सीधी पृथ्वी पर पड़ सके। और सूर्य, चन्द्रमा और सितारों के चलन की गति को साफ-साफ देखा जा सके।

जिस क्रिया शब्द का प्रयोग पद 16 में किया गया है उसका अनुवाद <u>बनाया गया</u> नहीं वरन <u>हो गया था,</u> होना चाहिए। परमेश्वर ने सूरज, चाँद, और सितारों की रचना चौथे दिन को नहीं की थी वरन उसने तो केवल उनको आज्ञा दी थी कि वह प्रकट में दिखाई दें। और इसी रीति से कि वे पृथ्वी पर से दिखाई दें और समय और मौसम पर राज्य करें। परमेश्वर ने ही भौतिक चीज़ों, ऊर्जा और उस अन्तरिक्ष की रचना की थी जिस में सूर्य चन्द्रमा और सितारों का स्थान निश्चिय था। इनकी रचना तो उत्पत्ति 1: 1 के आरम्भ में ही कर दी गई थी पर सष्टि के चौथे दिन ही उनको प्रकट रूप से दिखाई देन की आज्ञा दी थी। उस दिन के बाद से ही वे तारों से सम्बद्ध चिन्ह माने जाने लगे और उसी रीति से कार्य करने लगे थे जो एक कृषि सम्बन्धी कैलेण्डर था जिसके द्वारा मौसम के समय निर्धारित किए जाते थे। इसी से ऐतिहासिक कैलेण्डर का निर्माण हुआ जिस में 24 घंटे और सालों को नापा जाता है।

<u>सृष्टि का पाँचवाँ दिनः</u>

उत्पत्ति 1: 20-23 वर्णन करते हैं जल जीवन का, समुद्र जल का और ताज़े जल के प्राणियों का और उड़ने वाले पक्षियों का। इसमें महान समुद्रों के जीवों जैसे सामान्य मछलियाँ, शँख मछली, केंकड़ा, छोटी शँख मछली। एक ओर तो ये सब थे और दूसरी ओर कीटाणु थे, जैसे उड़ती छिपकली, और चिड़ियाँ। यह बहुत ही रोचक है जब कैम्ब्रियन युग में भूविज्ञान ने सबूत दिखाए थे जो उन पशुओं के थे जिनकी रीड़ की हड्डी होती थी। उस युग से पहले के पैलियोज़ौयिक युग के 5000 समुद्री और भू जाति के पशुओं का कोई रिकॉर्ड नहीं मिलता है जिस प्रकार कैम्ब्रियन युग के पशुओं के जीवाँश की परते पाई जाती हैं। परमेश्वर की आज्ञा कि फूलो फलो और संसार में फैल जाओ इन पशुओं के लिए नहीं थी। लेकिन जिस किसी की उसने आज्ञा देकर सृष्टि की थी उसके पास यह आशीष थी कि वे फूले -फलें और इस पृथ्वी को भर दें।

<u>सृष्टि का छटा दिनः</u>

उत्पत्ति 1: 24-26 वर्णन करते हैं सारे भूमि पर रहने वाले पशुओं की सृष्टि और पहले मानव की रचना के विषय में

बताता है। 24 पद का यह अर्थ कभी न निकाला जाए की पृथ्वी में सामर्थ थी कि वह निज से पशुओं की रचना कर सकती थी। भूमि पर के पशुओं में मवेशी भी शामिल थे जैस भेड़-बकरियाँ, सभी छोटे पशु जो ज़मीन पर इधर उधर भागते हैं। और फिर शेर और हाथी जैसे बड़े जानवर भी। इसे कोई वैज्ञानिक वितरण नहीं कह सकता है जैसा कि अकसर लोग पशुओं को देखते कर कहते हैं।

हर सृष्टि का दिन एक पूरे चक्र के प्रतीक द्वारा 6 सृष्टि दिनों के रूप में दर्शाया गया है जो अंधकार के दिन से शुरू होकर अगले दिन के अंधकार के शुर होने तक होता था। इस फॉरमूले का वास्त्विक प्रयोजन यह था कि शाम हुई और फिर सुबह। और फिर पहला दिन समाप्त हुआ। य़ह इसलिए था
कि परमेश्वर ने जो भी सृष्टि की थी उसे करने की एक स्पष्ट प्रक्रिया थी। लेखक का प्रयोजन यह नहीं था कि वह इस प्रक्रिया को किसी सबूत के रूप में इस्तेमाल करे। जिससे शाब्दिक रूप से उसे 24 घंटे के धारणा को सबूत माना जा सके। परमेश्वर ने इस बात का खुलासा नहीं किया है कि सृष्टि के 6 दिन कितने लम्बे थे और जो कुछ भी सिरजा गया उसमे कितना समय लगा था।

उत्पत्ति 2:1 पूरी सृष्टि की रचना का साराँश यह है कि अब पूरी सृष्टि की रचना पूरी हो चुकी थी। 2:2 वचन कहता है कि सातवाँ दिन उसी समय शुरू हो गया था जब परमेश्वर ने सृष्टि की रचना समाप्त कर दी थी।

2:2-3

<u>प्रश्न 4. मैं सातवें दिन को कैसे समझूँ जिस ने परमेश्वर की सृष्टि के मूल कार्य को पूरा कर दिया था?</u>

नोट्सः

बन्द करने का कोई फॉर्मूला नहीं था।

बाइबल इस बात को नहीं बताती है कि परमेश्वर ने सृष्टि की रचना के बाद केवल 24 घंटों तक ही विश्राम किया था। सातवाँ दिन उन 6 दिनों के समान नहीं था। जिस समय का अन्त हो गया था। परमेश्वर ने 6 दिन सृष्टि की रचना करने में बिताए और उसके बाद एक दिन विश्राम किया था। जिसके बाद सृष्टि की रचना के लिए और दिन नहीं थे।

नया नियम हमें सिखाता है कि यह सातवाँ दिन तब से निरन्तर चला आ रहा है और उसने कलीसिया के युग में “विश्राम दिन”के नाम से प्रवेश कर लिया है। इब्रा. 4:1-11 में यह स्पष्ट रूप से सिखाया गया है कि जब परमेश्वर ने 6 दिन में सृष्टि की रचना समाप्त कर ली थी तब सातवें दिन उसने विश्राम किया था। पर इस का यह अर्थ नहीं है कि परमेश्वर सृष्टि की रचना कर के थक गया था और विश्राम करने लगा। और न ही यह है कि आज भी परमेश्वर कोई काम नहीं कर रहा है। इस का अर्थ यह है कि चाहे परमेश्वर को नई सृष्टि नहीं कर रहा है पर वह निरन्तर उसने जो भी रचना की है उस पर एक राजा के समान राज्य कर रहा है। (युहन्ना 5:17; इब्रानियों 1:3)

ऐसे ही परमेश्वर के लोगों ने जिन्होंने अपनी सेवकाई पूरी कर ली है वे परमेश्वर के विश्राम में प्रवेश करेंगे। यह सबत का विश्राम (इब्रा.4:9) जो परमेश्वर के लोगों का है यह उस जीवन के विषय का संदर्भ है जो परमेश्वर की उपस्थिति में बिताया जाता है। और यह या तो तुरन्त मृत्यु के बाद स्वर्ग में होता है या फिर पुनरोत्थान के बाद नई पृथ्वी पर होगा।

हर सप्ताह सबत के दिन का प्रयोजनः

परमेश्वर के सृष्टि की रचना करने का नमूना मनुष्य के सप्ताह के कार्य का नमूना बन गया। सप्ताह के सातवें दिन का प्रयोजन थाः

- पढ़े निर्गमन 23:12 अपने सप्ताह भर के काम के बाद विश्राम करें जिससे तरो-ताज़ा हो जाएँ।

- लैव्यवस्था 23:3 अन्य विश्वासियों के साथ पवित्र संगति में मिलना।
- मरकुस 3:4 भले कार्य करके लोगों के जीवन बचाना।

1:26-27

प्रश्न 5. मैं उन डाइनासोर और मनुष्य के समान जन्तुओं के विषय में क्या विचार रखूँ जो हज़ारो साल पहले इस संसार में जीवित पाए जाते थे?

नोट्सः

डायनासोर और विशाल मनुष्य के समान जन्तुओं की रचना सृष्टि के छटे दिन की गई थी।
पैलेको मानव विकास के शास्त्री की खोज से मानव के समान जन्तुओं के अवशेष पाए गए है और उनको सामान्य रूप से वनमानुष या गुफावासी जंगली मानुष कहा जाता है। उनका अनुमान है कि ये जन्तु 1750000 से 2000000 साल पहले पाए जाते थे। इन अतीत के जन्तुओं को केवल वनमानुष कह कर उनकी मानसिकता को छोड़ा नहीं जा सकता है क्योंकि उनकी बुद्धि जिसके द्वारा उन्होंने पत्थर के औज़ार और शस्त्र बनाए थे वे भी उनके अवशेषों में पाए जाते हैं। इतना ही नहीं जो जले हुए अवशेष पाए जाते हैं वे बताते हैं कि उस समय भी भोजन पकाने के लिए आग का प्रयोग किया जाता था। पाषाण युग के अवशेषों में सबूत पाए जाते हैं कि उस समय मे भी मृत लोगों को कब्र में दफनाया जाता था। और तब भी मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास किया जाता था। कुछ अन्य कच्चे पदार्थ शायद सामप्रदायिक योजना की ओर संकेत करते हैं। कुछ गुफाओं में जो चित्रकला की तस्वीरे पाई जाती हैं वे पाषाण युग की हो सकती हैं। ये सारी जातियाँ जो क्रोमनोन से पहले भी ज़िंनथ्रोपस तक ऐसे अनेक प्राणी पाए जाते थे जिन में काफी बुद्धि और कुछ प्रप्त करनें के स्रोत थे।

वैज्ञानिक आधुनिक रीति से ऐसे प्राचीन प्राणियों की तकनीक की तिथियो के विषय में अलग विचार रखते हैं। उत्पत्ति 1:24-27 पद हमें सिखाते हैं कि ये सभी प्राणी सृष्टि की रचना के छटे दिन ही रचे गए थे। लेकिन कोई भी उस छटे दिन की अवधि को नहीं जानता है।

उपज की, पशुओं की और मनुष्य रूपी प्राणियों की मृत्युः

मृत्यु तो उन पाप करने वाले मनुष्य के लिए जो परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए थे उनके लिए परमेश्वर का न्याय था। (उत्पत्ति 2:15-17) इसका यह अर्थ नहीं है कि अन्य सभी जीवित प्राणियों की शारीरिक मृत्यु जैसे कि पेड़, पौधे, चिड़ियें, मछलियाँ, पशु या रेंगने वाले प्राणी केवल तभी पाए गये जब मनुष्य पाप में गिर चुका था। शारीरिक मृत्यु तो मनुष्य के पाप में गिरने से पहले भी थी क्योंकि भोजन खाने के कारण ही फलों, पौधों, और घास की शारीरिक मृत्यु होती थी। (उत्पत्ति 1:29-30) बहुत सी ऐसी जीवित प्राणियों की जातियाँ है जो भोजन के बिना कुछ घंटे भी जीवित नहीं रह सकती हैं। अर्थात वे किसी अन्य प्राणी की मृत्यु के बिना जीवित नहीं रह सकती है।

केवल मनुष्य को ही परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया था। और केवल मनुष्य ही इस काबिल था कि वह परमेश्वर के साथ सम्बन्ध स्थापित कर सके। और केवल मनुष्य ही था जिसने परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानी थी। और इस रीति से परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया था। इसलिए मृत्यु का न्याय भी केवल मनुष्य के लिए ही है। वह मृत्यु जिसका वर्णन उत्पत्ति 2:17 पद में और रोमियों 5:12,18 पद में दिया गया है उसका संदर्भ आत्मिक मृत्यु से है और अन्त में अनन्त मृत्यु से है। पहले मनुष्य के पाप के बाद परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत को भेजा था कि वह जीवन के वृक्ष की रक्षा करे। क्योंकि निश्चय ही मनुष्य के पास वह सामर्थ थी कि वह अनन्त जीवन को पा सके। पाप करने से पहले भी और बाद में भी यदि वह उस पेड़ का फल खा लेता तो वह अनन्त जीवन पा लेता। उस पेड़ का फल न खाने के कारण पापी मनुष्य के लिए वह रास्ता बन्द कर दिया गया था जिसके द्वारा शारीरिक, आत्मिक और अनन्त मृत्यु को पलटा देना सम्भव न होता।

इस रीति से जीवित प्रणियों की अनेक जातियाँ मनुष्य के पाप में गिरने से पहले ही शारीरिक रूप से मर गई थीं। माँसाहारी जीव जन्तुओं की शारीरिक गर्मी की जो प्रक्रियाएँ हैं प्राकृतिक हैं न कि मनुष्य के पाप के द्वारा हैं। आज के युग में लोग पशुओं की मृत्यु को निजि हानि के रूप में देखते हैं इसी लिए वे पशुओं की मृत्यु के दुख को भी मनुष्य की मृत्यु के दुख के समान ही देखते हैं। लेकिन केवल मनुष्य ही परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है। केवल उन्ही के दुख और मृत्यु को देखा जाता है। (उत्पत्ति 3:16-19)

मनुष्य के समान दिखने वाले प्राणी बाइबल के वचन के अनुसार मनुष्य नहीं थेः

प्रेरितों के काम 17:26 कहता है, "एक मनुष्य के द्वारा"(शाब्दिक रूप से एक ही लहु से) परमेश्वर ने मनुष्यों के हर राष्ट्र की रचना की थी। और रोमियो 5:12-21 माँगता है कि पूरी मानव जाति आदम के समय से लेकर आज तक वास्तव में उसी की पीढ़ियाँ हैं। क्योंकि उनसे परमेश्वर ने एक वाचा बाँधी थी जो सारी मानव जाति के लिए थी। इस से साफ पता चलता है कि आदम जिस की रचना परमेश्वर ने की थी और अन्य मनुष्य रूपी जीवों का आपस में कोई पैत्रिक सम्बन्ध नहीं है। प्राचीन काल के मनुष्य रूपी जीव आदम के पूर्वज नहीं थे। और न ही वे परमेश्वर की वाचा से जुड़े थे जो परमेश्वर ने आदम से वाचा बाँधी थी। (उत्पत्ति 1:28-30; 2:15-17)

इन मनुष्य रूपी जीवों के कंकाल चाहे कितना भी आधुनिक मानव के समान हों यह बात कोई मायने नही रखती है उस मुख्य प्रश्न के अनुसार कि क्या उन में सच में मानव की आत्मा या व्यक्तित्व था? उत्पत्ति 1:26-27 जो बताता है कि परमेश्वर एक बढ़िया स्तर के मनुष्य की रचना कर रहा था जब उसने आदम की रचना की थी। जिसका अर्थ है आदम ही भाषा मे कहा गया प्रथम मानव था। जैसा आधुनिक भाषा में कहा जाता है। आदम वह पहला मनुष्य थी जिसे परमेश्वर ने अपने ही स्वरूप में रचा था। आधुविक भाषा में हम कह सकते हैं कि वह पहली जीवित आत्मा था जो एक जीवित शरीर में देखा जा सकता था। और जो एक अदृष्य आत्मा है और परमेश्वर के स्वरूप में पाई जाती है। और विज्ञान में इसको नकारने का कोई सबूत नहीं है।

1:26-27

<u>प्रश्न 6. इसका क्या अर्थ है, कि मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है?</u>

नोट्सः

मनुष्य का एक विशेष शारीरिक जीवन है।

उत्पत्ति 2:7 पद कहता है, परमेश्वर ने मनुष्य को धरती की मिट्टी से बनाया था। और फिर उसमें जीवन का श्वास फूँका था और तब मनुष्य एक जीवित आत्मा बन गया था। मनुष्य का शरीर अन्य जन्तुओं के शरीर के समान उन तत्वों से परिपूर्ण है जो पृथ्वी में पाए जाते हैं। लेकिन वे उन पशुओं से भिन्न होते हैं जो परमेश्वर की आज्ञा द्वारा रचे गए थे। परमेश्वर के हाथों ने पहले मनुष्य की रचना की थी। मनुष्य को भी पशुओं के समान जीवन का श्वास दिया गया था। (उत्पत्ति 2:7; 7:22) लेकिन एक अन्तर था, पशुओं को श्वास परमेश्वर की आज्ञा से मिला था पर पहले मानव को परमेश्वर ने स्वयं उसके नथुनों में श्वास फूँका था। सो हम कह सकते हैं कि परमेश्वर ने स्वयं मनुष्य को साँस दिया था और उसके द्वारा जीवन।

मनुष्य का एक विशेष आत्मिक स्वभाव होता है।

उत्पत्ति 1:26-27 कहता है, कि मनुष्य की रचना और भी अधिक विशेष है क्योंकि वह त्रिएक परमेश्वर का निर्णय था। जो कहता है, "आओ हम मनुष्य को अपने ही स्वरूप में अपने समान बनाएँ।"और फिर परमेश्वर ने मनुष्य को अपने ही समान अपने ही स्वरूप में बना दिया था। मनुष्य को एक आत्मिक स्वभाव भी दिया गया था जो बिलकुल परमेश्वर के स्वभाव के समान था। उसके अन्दर परमेश्वर के वास्तविक और विशेष गुण भरे थे। देखा जाए तो वह परमेश्वर के

व्यक्तित्व का एक और प्रतिरूप था। इस कारण इस सृष्टि में मनुष्य की रचना विशिष्ट है। मनुष्य को छोड़ किसी में भी परमेश्वर का स्वरूप नहीं पाया जाता है।

मनुष्य का परमेश्वर के साथ एक अद्‌वितीय सम्बन्ध भी है।

उत्पत्ति 1:28-29 कहता है, परमेश्वर ने आदम से आमने सामने बातचीत की थी। यही परमेश्वर का मनुष्य पर पहला प्रकटीकरण था। इसका अर्थ है कि मनुष्य के पास वह योग्यता है जिसके द्‌वारा वह परमेश्वर के साथ बात-चीत कर सकता है। इसके इलावा परमेश्वर ने मनुष्य को काम दिया है कि वह सारी पृथ्वी को अपने अधीन करके सभी जीवित प्रणियों पर राज्य करे और पेड़ पौधों का अपनी ज़रूरत के अनुसार इस्तेमाल करे। इस रीति से परमेश्वर प्रकट करता है कि उसने पृथ्वी की रचना मनुष्य के लिए की थी। और उसने मनुष्य को अपनी सृष्टि का भंडारी और प्रबन्धक वना दिया है।

<u>तरीका 4.लागू करना</u> **प्रयोग में लाना**

ध्यान देनाः इस लेखाँश में कौन से ऐसे सत्य है जो मसीही लोग अपने जीवन में लागू कर सकते हैं?

अपने विचार बाँटें और लिख लेः आईए हम एक दूसरे के दिमाग में तूफान ला दें और उन सब सच्चाईयों को लिख ले जो हमें उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ से जीवन में लागू करनी हैं।

ध्यान देः कौन सी ऐसी बात हमें लागू करनी है जो परमेश्वर चाहते है कि हम निजि रूप से अपने जीवन में लागू करें?

लिख लेः यह निजि लागू करने का सत्य जो आप अपने जीवन मे लागू करने वाले है उसे अपनी कापी पर लिख लें। अपने इस निजि चुनाव को दूसरों के साथ बाँटें।

(याद रहे हर व्यक्ति भिन्न सत्य का चुनाव कर सकता है या किसी सत्य को अन्य रीति से अपने जीवन पर लागू कर सकता है। नीचे कुछ उदाहरणों की सूची है।

1. <u>उदाहरणों की सूची जो उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ से दोषी सिद्ध होने के बाद लागू किए जा सकते हैं।</u>

1:1,28 बाइबल में उत्पत्ति के पहले 2 अध्याय नहीं बताते हैं कि परमेश्वर ने सारी सृष्टि की रचना करने में कितना समय लगाया था, पर वह हमें बताते हैं कि किसने सभी चीज़ों की रचना की थी और किसके लिए की थी। - उन लोगों के लिए जिन को परमेश्वर ने अपने ही स्वरूप में रचना की थी।

1:1-2 परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना तो पहले से ही कर दी थी। उन 6 दिनों कि सृष्टि से पहले ही। उन विशेष 6 दिनों में जब परमेश्वर ने अपनी सृष्टि की रचना पूरी की तब उसने आज्ञाएँ दी थी कि सृष्टि में विशेषकर इस पृथ्वी पर सब कुछ रच जाए जो इस पृथ्वी की ज़रूरत थी।

1:11,21,24 इन पदों मे परमेश्वर प्रकट करते हैं कि सारी जीवित प्राणियों की जातियाँ मूल रूप से की गई सृष्टि से उत्पन्न नहीं हुई थी वरन कुछ की सृष्टि परमेश्वर ने स्वयें की थी।

1:27-28 परमेश्वर की योजना थी कि वह सारी पृथ्वी को ऐसे लोगो से भर दे जो उसके स्वरूप में बनाए गए थे।

1:28 परमेश्वर की अपने लोगों के लिए आज्ञा है कि वे सृष्टि की देखभाल करें।

1:31 सृष्टि की रचना पूरी करने के बाद जब परमेश्वर ने देखा तो कहा सब कुछ भला है। क्योंकि कि कहीं कोई बुराई नहीं थी।

2:2-3 परमेश्वर की इच्छा थी कि मनुष्य 6 दिन काम करें और फिर सप्ताह में एक दिन विश्राम करे।

2:4 बाइबल में उत्पत्ति के पहले 2 अध्याय प्राचीन लोगों की कोई काल्पनिक कहानी नहीं है। उत्पत्ति 2:4 कहता है कि यह तो स्वर्ग और पृथ्वी का कोई ऐतिहासिक व्यौरा है।

2. निजि रूप से सत्यों को लागू करने के उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ से लिए गए उदाहरण।

मैं परमेश्वर की एक विशेष रचना हूँ, मेरा शरीर और मेरी आत्मा दोनो ही परमेश्वर के लिए बहुमूल्य हैं। इस लिए मैं कभी भी स्वयं को नीचा नहीं देखना चाहूँगा, अपने से घृणा नहीं करूँगा और न ही स्वयं का तिरस्कार करूँगा। मैं अपने शरीर और अपनी आत्मा की अच्छे से देखभाल करूँगा।

मैं परमेश्वर द्वारा दिए गए काम को गम्भीरता से लूँगा। परमेश्वर की रचना होने के कारण मैं अपने परमेश्वर को जानना चाहूँगा और उसी के स्वरूप में योग्यता से चलूँगा। मैं स्त्री और पुरुष की भिन्नता को भी गम्भीरता से लूँगा। और मैं प्रकृति की भी अच्छे से देखभाल करूँगा।

तरीका 5 प्रार्थना करो **प्रतिउत्तर**

आईए हम एक सत्य के लिए प्रार्थना करें जो परमेश्वर ने हमें उत्पत्ति 1:1 – 2:4अ में हमें सिखाया है।

(अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें कि बाइबल अध्ययन के दौरान आपने क्या सीखा है? और केवल एक या दो वाक्यों में ही प्रार्थना करें। और याद रखे कि दल के अन्य लोग भिन्न विषयों में बात करेंगे।)

5.	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***मध्यस्थता*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

निरन्तर 2 या 3 लोगों के दल बना कर एक दूसरे के लिए और संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करे

6.	**तैयारी** (2 मिनट)	***निर्धारित कार्य*** **अगले पाठ के लिए**

दल के अगुवेः दल के सदस्यों को घर पर तैयारी का काम करने के लिखित रूप से दे दें।

1.<u>समर्पणः</u> किसी एक सत्य के प्रति जो आपके लिए सम्भव है स्वयं को समर्पित कर दे।

2.<u>परमेश्वर के साथ निजि समयः</u> मत्ती 15:1 – 18:20 अध्यायों में से हर दिन आधे अध्याय का अध्ययन करें। और इसका अध्ययन करने के लिए अपने मनपसन्द सत्य का तरीका इस्तेमाल करें।

3.<u>मुँह ज़ुबानी याद करना बाइबल में सीखे नए बाइबल वचन को याद कर लें</u>। “प्रार्थना का उत्तर पाने का आश्वासन।”(युहन्ना 16:24) हर दिन पिछले दो बाइबल के वचनों को फिर से बोल कर देखें यह जानने को कि वे अब भी याद हैं या नहीं।

4. <u>प्रार्थनाः</u> इस सप्ताह किसी विशेष विषय पर प्रार्थना करें और देखें परमेश्वर इस सप्ताह आपके लिए क्या कर रहे हैं। (भजन 5:3)

5. <u>अपनी सप्ताह के नोट्स की कापी को पूरा करें।</u> आपने कितने नए चेले बनाए हैं उनकी सूची पूरी करें। अपने नोट्स में परमेश्वर के साथ अपने निजि समय में आपने क्या सीखा है उसे भी जोड़ लें। जो वचन आपने याद किए हैं उनको भी लिख लें। साथ ही आपके बाइबल अध्ययन के नोट्स भी जोड़ लें। यही आपकी तैयारी गिनी जाएगी।